Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **15.04.2016** बैतुल फ़तूह लंदन।

विश्व के प्रत्येक देश में प्रयास होना चाहिए कि मस्जिदों को आबाद करें, विशेष रूप से यदि ओहदेदार तथा जमाअत के कारकुन, वाक़िफ़ीन-ए-जिन्दगी इस ओर ध्यान दें तो नामज़ों में हाज़िरी बहुत अच्छी हो सकती है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

क़ुरआन-ए-करीम में नमाज़ों को अदा करने की ओर कई स्थानों पर ध्यान दिलाया गया है। कहीं नमाज़ों की रक्षा का आदेश है। कहीं इसमें नियमत्ता धारण करने का आदेश है। कहीं इसकी समय पर अदायगी का निर्देश है तथा फिर इसके लिए समय भी सुनिश्चित कर दिया कि अमुक अमुक समय निश्चित हैं जिनके अनुसार मोमिन को पालन करना चाहिए, इसकी पाबन्दी करनी चाहिए। अतः नमाज़ों को अदा करने तथा इसके महत्त्व के बारे में बार बार ख़ुदा तआला ने एक मोमिन को निर्देश दिया है और सबसे बढ़कर यह फ़रमाया कि इंसान की उत्पत्ति का उद्देश्य ही इबादत है। जैसे कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَمَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَالۡاِنۡسَ اِلَّا لِيَعۡبُدُوۡنِ अर्थात जिन तथा इन्स को पैदा करने का उद्देश्य ही उपासना है। परन्तु इंसान इस उद्देश्य को पहचानता नहीं और इससे दूर हटा हुआ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि-

अल्लाह तआला ने तुम्हारी उत्पत्ति का वास्तविक उद्देश्य यह रक्खा है कि तुम अल्लाह तआला की इबादत करो परन्तु जो लोग इस मूल कर्म को छोड़कर पशुओं की भांति जीवन का उद्देश्य केवल खाना, पीना तथा सोना समझते हैं वे ख़ुदा तआला की कृपा से दूर जा पड़ते हैं तथा ख़ुदा तआला का दायित्व उनके लिए नहीं रहता। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यह उद्देश्य है जो एक ईमान का दावा करने वाले को अपनी सम्पूर्ण क्षमतओं के द्वारा, ध्यान पूर्वक पूरा करने का प्रयास करना चाहिए ताकि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल के उत्तराधिकारी बने रहें। अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को प्राप्त करते रहें। और इबादत का लक्ष्य किस प्रकार पूरा होता है? इसके लिए इस्लाम ने हमें पाँच समय की नमाज़ों को अदा करने का आदेश दिया है। हदीस में है कि नमाज़ इबादत का मग़्ज़ है। अतः इस तत्व को प्राप्त करके ही हम इबादत का परम उद्देश्य पूरा कर सकते हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- स्थानीय लोगों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। अपने नमाज़ सैन्टरों में यथावत् नमाज़ की अदायगी के लिए जाया करें, विशेष रूप से फ़ज्र की नमाज़ की अदायगी के लिए और केवल यहाँ ही नहीं, बल्कि दुनया के हर एक देश में इसके लिए प्रयास होना चाहिए कि मस्जिदों को आबाद करें। विशेष रूप से यदि ओहदेदार तथा जमाअत के कार्य-कर्ता, वाक़िफ़ीन-ए-ज़िन्दगी इस ओर ध्यान दें तो नामज़ों में हाज़िरी बहुत अच्छी हो सकती है। नमाज़ों को सुनिश्चित समय पर तथा नियमानुसार पढ़ने के विषय में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

नामज़ों को यथाविधि नियमानुसार पढ़ो। कुछ लोग केवल एक ही नमाज़ पढ़ लेते हैं वे याद रक्खें कि नमाज़े माफ़ नहीं होतीं, यहाँ तक कि पैग़म्बरों तक को माफ़ नहीं हुईं। एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक नई जमाअत आई, उन्होंने नामज़ की माफ़ी चाही कि हम व्यस्त रहते हैं, काम का बोझ है, हमें नमाज़ें माफ़ कर दें। आपने फ़रमाया कि जिस धर्म में यह कर्म नहीं वह मज़हब कुछ नहीं। इस लिए इस बात को ख़ूब याद रक्खो तथा अल्लाह तआला की दिशानिर्देश के अनुरूप अपने कर्म कर लो।

अल्लाह तआला की कृपा परम उद्देश्य है। यह विचार ग़लत है कि स्वास्थ्य है तो सब कुछ है अथवा अमुक अमुक कार्य करने से सेहत क़ायम रहेगी या बीमार हूँगा तो अमुक औषधि लेने से स्वास्थ्य प्राप्त हो जाएगा। ये सब चीज़ें अल्लाह तआला

के आदेशों के आधीन हैं और यदि अल्लाह तआला का निर्देश नहीं होगा तो सब व्यर्थ हैं। अतः जिसके आदेशानुसार ये सब चीज़ें चल रही हैं उसके आगे हमें झुकने की आवश्यकता है, उसकी उपासना की आवश्यकता है, उसके साथ सम्बंध स्थापित करने की आवश्यकता है। अतः नमाज़ें जहाँ जीवन के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अनिवार्य हैं वहीं हमें कठिनाईयों एंव जटिल प्रस्थितयों से भी बचाती हैं। क्यूँकि बहुत सारे काम ऐसे होते हैं जो प्रत्यक्षतः असम्भव होते हैं परन्तु अल्लाह से सम्बंध हो, तो वे सम्भव हो जाते हैं। अतः जो कुछ होता है अल्लाह तआला के आदेशानुसार होता है। इस लिए अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को समेटने का अधिक से अधिक प्रयास करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ख़ूब याद रक्खो कि अल्लाह तआला को छोड़कर दवा तथा युक्ति पर भरोसा करना मूर्खता है। अपने जीवन में ऐसा बदलाव उत्पन्न कर लो कि जैसे कि एक नया जीवन है। इस्तिग़फ़ार अधिकता से पढ़ो, जिन लोगों को सांसारिक व्यस्तता के कारण कम समय मिलता है उनको सबसे अधिक डरना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- केवल नमाज़ें ही नहीं बल्कि इससे बढ़कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे आशा रखते हैं और इस बारे में नफ़लों एंव तहज्जुद की नमाज़ की ओर ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं- इस जीवन की समस्त साँसें यदि सांसारिक कामों में व्यतीत हो गईं तो आख़िरत के लिए क्या बचाया है? यदि पूरे समय प्रत्येक साँस हर पल इंसान ने दुनया कमाने में लगा दिया तो परोक्ष के लिए क्या एकत्र किया। फ़रमाया कि तहज्जुद में विशेष रूप से उठो तथा पूर्ण रूचि के साथ नामज़ अदा करो। बीच की नमाज़ों में नौकरी के कारण परीक्षा उत्पन्न हो जाती है। फ़रमाया कि जीविका देने वाला अल्लाह तआला है, नमाज़ अपने समय पर अदा करनी चाहिए, ज़ोहर व अस्र की कभी कभी जमा हो सकती है। अल्लाह तआला जानता था कि वृद्ध लोग होंगे इस लिए यह व्यवस्था रख दी परन्तु यह व्यवस्था तीन नमाज़ों के जमा करने में नहीं हो सकती जबकि नौकरी तथा अन्य कई कामों में लोग दंड पाते हैं तथा अधिकारियों का अत्याचार होता है तो यदि अल्लाह तआला के लिए कठिनाई उठावें तो क्या ख़ूब है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नमाज़ क्या है? एक विशेष दुआ है परन्तु लोग इसको बादशाहों का टैक्स समझते हैं अर्थात विवशता के कारण दे रहे हैं, अदा कर रहे हैं, मानो कि जैसे कर लगा हुआ है। नादान इतना नहीं जानते कि भला ख़ुदा तआला को इन बातों की क्या आवश्यकता है, उसके निःस्वार्थ अस्तित्व को इसकी क्या आवश्यकता है कि मनुष्य दुआ, तस्बीह़ तथा लीनता में मग्न रहे बल्कि इसमें इंसान का अपनी लाभ है कि वह इस मार्ग के द्वारा अपने लक्ष को पहुंच जाता है। ख़ूब समझ लो कि इबादतों में कोई बोझ और टैक्स नहीं, इसमें भी एक प्रकार का हर्ष एंव आनन्द है तथा यह हर्ष और आनन्द संसार के समस्त स्वादों से उच्च श्रेणी एंव उच्च स्तरीय है। जैसे कि एक रोगी किसी अच्छे से अच्छे तथा स्वाद से भरे आहार से वंचित होता है, इसी प्रकार , हाँ ठीक ऐसा ही वह तुच्छ मनुष्य है जो अल्लाह की इबादत से आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यदि एक रोगी को एक अच्छा आहार अपने रोग के कारण, बीमारी के कारण, मुंह कड़वा होने के कारण उसको स्वादिष्ट नहीं लगता, उसका स्वाद अनुभव नहीं होता तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह आहार ख़राब है। इसका अर्थ यह है कि वह रोगी है। इसी प्रकार जो नमाज़ और इबादत से आनन्द प्राप्त नहीं करता तो इसका अर्थ यह नहीं कि नमाज़ों में आनन्द नहीं, अथवा मज़ा नहीं रक्खा, अल्लाह तआला ने। रक्खा है, परन्तु मनुष्य की अपनी प्रकृति, बीमारी, अरूचि इसके द्वारा आनन्द नहीं उठाती।

आनन्द एंव सरूर (हल्का नशा) की सी अवस्था के विषय को अधिक स्पष्ट करते हुए एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं देखता हूँ कि लोग नमाज़ों में असतर्क और सुस्त इस लिए होते हैं उनको इस आनन्द एंव इस हल्के नशे का ज्ञान नहीं जो अल्लाह तआला ने नमाज़ में रक्खा है। अतः मैं यह कहना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला से बड़ी करुणा एंव जोश के साथ यह दुआ मांगनी चाहिए कि जिस प्रकार फलों एंव अन्य चीज़ों में भांति भांति के स्वाद प्रदान किए हैं, नमाज़ तथा इबादत का भी एक बार स्वाद प्रदान कर दे। खाया हुआ याद रहता है। देखो यदि कोई व्यक्ति किसी सुन्दर को एक रूचि के साथ देखता है तो वह उसे ख़ूब याद रहता है और फिर यदि भद्दे चेहरे तथा कुरूप आकृति को देखता है तो उसकी पूर्ण आकृति सामने आ जाती है। सुन्दरता भी याद रहती है और कुरूपता भी याद रहती है। हाँ यदि कोई सम्बंध न हो तो कुछ याद नहीं रहता। इसी प्रकार नमाज़ न पढ़ने वालों के विचार में नमाज़ एक प्रकार का जुर्माना है कि अकारण ही प्रातः उठकर शरद ऋतु में वज़ू

करके, सुन्दर सपनों को छोड़कर, कई प्रकार की सुख समृद्धि का त्याग करके पढ़नी पड़ती है। वास्तविकता यह है कि उसमें अरूचि की भावना है वह इसको समझ नहीं सकता। इस आनन्द एंव स्वाद से जो नमाज़ में है, वह अनभिज्ञ है। एक शराबी एंव नशा करने वाले इंसान को जब आनन्द नहीं आता तो वह निरन्तर प्याले पर प्याले पीता जाता है यहाँ तक उसको एक प्रकार का नशा आ जाता है। बुद्धिमान तथा बुजुर्ग इंसान इससे लाभ प्राप्त कर सकता है। कुछ लोग नमाज़ पढ़ने के बाजूद फिर कुकर्म करते हैं, इसका जवाब यह है, फ़रमाया- इसका उत्तर यह है कि वे नमाज़ें पढ़ते हैं परन्तु आत्महीनता एंव सत्यहीनता के साथ। वे केवल रस्म तथा प्रवृत्ति के कारण टकरें मारते हैं, उनकी आत्मा मरी हुई है। वह नमाज़ बुराईयों को दूर करती है जो अपने भीतर एक सत्यात्मा रखती है तथा फ़ैज़ का प्रभाव उसमें विद्यमान है, वह नमाज़ निःसन्देह, यक़ीनन बुराईयों को दूर करती है। नमाज़ केवल उठने बैठने का नाम नहीं है। नमाज़ का सार तथा रूह, दुआ है जो एक प्रकार का आनन्द एंव हर्ष अपने अन्दर रखती है।

फिर नमाज़ की विभिन्न अवस्थाओं की हिकमत तथा जो प्रभाव उनका हम पर होना चाहिए उसका विवरण बयान फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- जब इंसान खड़ा होता है तथा ईश स्तुति एंव गुण गान करता है तो उसका नाम क़याम रक्खा। अब प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि ईश्वर की प्रशंसा एंव गुण गान का उपयुक्त समय क़याम ही है। देखो बादशाहों के समक्ष जब प्रशंसा कर कविताएँ सुनाई जाती हैं तो उसे खड़े होकर ही परस्तुत करते हैं तो इधर प्रत्यक्ष रूप से क़याम रक्खा है उधर ज़बान से ईश स्तुति एंव प्रशंसा भी रक्खी है। अभिप्रायः इसका यही है कि रूहानी रूप से भी अल्लाह तआला के समक्ष खड़ा हो। प्रशंसा एक बात पर स्थापित होकर की जाती है, जो व्यक्ति सत्य मन के साथ किसी की प्रशंसा करता है तो वह एक धारणा पर स्थापित हो जाता है। अलहमदु लिल्लाह कहने के लिए यह अनिवार्य हुआ कि वह सच्चे मन के साथ अलहमदु लिल्लाह उसी समय कह सकता है कि सम्पूर्ण रूप से वह आश्वस्त हो जाए कि सम्पूर्ण प्रशंसा के रूप अल्लाह तआला के लिए ही हैं। समस्त प्रकार की जो प्रशंसाएँ हैं वे अल्लाह तआला के लिए हैं। जब यह बात दिल में सुदृढ़ता के साथ उत्पन्न हो गई तो यह आध्यात्मिक क़याम है। फिर रुकूअ में सुब्हाना रब्बियल अज़ीम कहता है, विधिवत् बात है कि जब किसी की महानता को मान लेते हैं तो उसके समक्ष झुकते हैं, महानता की आवश्यकता है कि उसके लिए रुकूअ करे। अतः सुब्हाना रब्बियल अज़ीम ज़बान से कहा तथा क्रिया के द्वारा झुकना दिखा दिया।

फिर तीसरा कथन है सुब्हाना रब्बियल आला। आला अफ़अल तफ़जील (उच्चतम दयानिधान) है। यह स्वयं सजदे को चाहता है। इस लिए इसका आकृति चित्र सजदे में गिरना है। इसको स्वीकार करने के लिए उचित आकृति तुरन्त धारण कर ली अर्थात जब अल्लाह तआला की पवित्रता तथा उसका उत्तम होना तथा सब पर उसके प्रभुत्व को दिल से स्वीकार किया तो साथ ही सजदे में गिर गया। तीसरी चीज़ और है, वह यदि शामिल न हो तो नमाज़ नहीं होती। वह क्या है? विवेक है, इसके लिए आवश्यक है कि मन स्थापित हो और अल्लाह तआल उसपर दृष्टि डाल कर देखे कि वास्तव में वह प्रशंसा भी करता है तथा खड़ा भी है तथा रूह भी खड़ी हुई प्रशंसा करती है, शरीर ही नहीं अपितु रूह भी खड़ी है। और जब सुब्हाना रब्बियल अज़ीम कहता है तो देखे कि इतना ही नहीं कि केवल महानता को स्वीकार ही किया है, नहीं, बल्कि साथ ही झुका भी है तथा इसके साथ ही रूह भी झुक गई है। फिर तीसरी नज़र में ख़ुदा के समक्ष सजदे में गिरा है उसकी महानता की शान को याद करके। इसके साथ ही देखे कि रूह भी अल्लाह की चौखट पर गिरी हुई। भावार्थ यह है कि जब तक यह अवस्था उत्पन्न न हो ले, उस समय तक निश्चिंत न हो क्यूँकि يقيمون الصلوة का अर्थ यही है। यदि यह सवाल हो कि यह अवस्था किस प्रकार उत्पन्न हो तो इसका उत्तर इतना ही है कि नमाज़ में स्थिरता पैदा की जाए तथा बोध भ्रम एंव सन्देहों से दुविधा में न पड़े। आरम्भिक अवस्था में सन्देहों एंव भ्रम के कारण एक प्रकार का युद्ध अवश्य होता है। इसका इलाज यही है कि न थकने वाली दृढ़ता एंव संतोष के साथ लगा रहे तथा ख़ुदा तआला से दुआएँ मांगता रहे। अन्ततः वह अवस्था पैदा हो जाती है जिसको अभी मैंने वर्णन किया है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः स्थिर स्वभाव शर्त है, यदि इंसान में पैदा हो जाए तो अल्लाह तआला दौड़कर फिर अपने बन्दे की ओर आता है। फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल भी अवतरित होते हैं परन्तु इस यथार्थ को बहुत से लोग समझते नहीं, जल्द बाज़ी में ख़ुदा तआला की चौखट को छोड़ देते हैं अथवा इसके महत्त्व को नहीं समझते, कम महत्ता समझते हैं तथा दुनिया की अन्य संस्थाओं की ओर भी फिर दौड़ लगा देते हैं। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- फिर यह बात याद रखने योग्य है कि यह नमाज़ जो अपने वास्तविक अर्थ में नमाज़ है, दुआ से प्राप्त होती है। अल्लाह के अतिरिक्त किसी

से सवाल करना मोमिनों के स्वाभिमान के घोर विरुद्ध है क्यूँकि यह स्तर दुआ का अल्लाह तआला के लिए है। सामान्यतः परस्पर आवश्यकता पड़ती रहती है, सवाल होते हैं परन्तु ऐसे सवाल जिनका सम्बंध केवल ख़ुदा तआला से है, ख़ुदा तआला को छोड़ कर किसी से आशा करना, किसी अन्य पर आश्रित होना , यह चीज़ ग़लत है। फ़रमाया कि जब तक इंसान पूर्ण रूप से छोटा बनकर अल्लाह तआला ही से सवाल न करे तथा उसी से न मांगे, सच समझो कि वास्तविक रूप में वह मुसलमान तथा सच्चा मोमिन कहलाने का अधिकारी नहीं। इस्लाम का यथार्थ ही यह है कि उसकी समस्त शक्तियाँ, भीतरी हों अथवा बाहरी, सब की सब अल्लाह तआला के आस्ताने पर गिरी हुई हों। जो व्यक्ति अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी अन्य से सवाल करता है वह याद रक्खे कि वह बड़ा ही दुर्भागा एंव दया योग्य है। अतः यह बड़ी भयानक तथा दिल को कपकपा देने वाली बात है कि इंसान अल्लाह तआला को छोड़ कर दूसरे से सवाल करे इसी लिए नमाज़ की व्यवस्था एंव पाबन्दी अनिवार्य है ताकि प्रथम यह कि वह एक दृढ़ प्रवृत्ति के अनुरूप स्थापित हो तथा अल्लाह की ओर लौट कर जाने का ध्यान हो फिर धीरे धीरे वह समय स्वयं आ जाता है जबकि सम्पूर्ण संसार मुक्ति की अवस्था में इंसान एक नूर तथा आनन्द का उत्तराधिकारी हो जाता है। मैं इस बात को फिर अनुरोध के साथ कहता हूँ, खेद है कि मुझे वे शब्द नहीं मिले जिनके द्वारा मैं अल्लाह के अतिरिक्त आस्तानों की ओर जाने की बुराईयाँ बयान कर सकूँ। लोगों के पास जाकर विनती करते हैं, यह बात ख़ुदा तआला के स्वाभिमान को जोश में लाती है। मैं मोटे शब्दों में इसको बयान करता हूँ यद्यपि यह बात इस प्रकार से नहीं है परन्तु समझ में ख़ूब आ सकती है। जैसे कि एक स्वाभिमानी पुरुष का स्वाभिमान आग्रह नहीं करता कि वह अपनी पत्नि को किसी अन्य के साथ सम्बंध स्थापित करते हुए देख सके और फिर जिस प्रकार ऐसी अवस्था में यह भी स्थिति हो जाती है कि उस नीच स्त्री का वद्ध अनिवार्य समझता है। अतः बन्दगी तथा दुआ विशेषकर उसी अस्तित्व के मुक़ाबले पर हैं। वह पसन्द नहीं करता कि किसी अन्य को पूज्य समझा जावे अथवा पुकारा जावे। अतः ख़ूब याद रक्खो और फिर याद रक्खो कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर झुकना, ख़ुदा से काटना है। कुछ लोगों की यह धारणा है कि अल्लाह तआला के समक्ष रोने धोने से कुछ नहीं मिलता, पूर्णतः अनुचित एंव झूठ है यह बात। ऐसे लोग अल्लाह तआला के अस्तित्व एंव उसकी शक्ति एंव अधिकार पर ईमान नहीं रखते। यदि उनमें वास्तविक ईमान होता तो वे ऐसा कहने का साहस न करते। जब कोई व्यक्ति अल्लाह तआला के समक्ष आया है तथा उसने सच्ची तौबा के साथ वापसी की है अल्लाह तआला ने सदैव उस पर अपना फ़ज़्ल किया है।

ख़ुदा तआला तो चाहता है कि तुम उसके समक्ष पाक दिल लेकर आओ, केवल शर्त यह है कि उसके निर्देशानुसार अपने आपको बनाओ, यह बहुत बड़ी बात है। मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ कि ख़ुदा तआला में आश्चर्य जनक शक्तियाँ हैं तथा उसमें असीमित फ़ज़्ल एंव बरकतें हैं परन्तु उनको देखने तथा पाने के लिए मुहब्बत की आँख पैदा करो। यदि सच्ची मुहब्बत हो तो ख़ुदा तआला बड़ी दुआएँ सुनता है तथा समर्थन करता है। अतः हमें अपनी ऐसी अवस्था बनाने की आवश्यकता है कि ख़ुदा तआला हमारी सुने। जो आपत्ति करते हैं कि अल्लाह तआला सुनता नहीं उनमें से अधिकांश लोग तो नमाज़ें भी पाँच समय की पूरी नहीं पढ़ते। केवल नमाज़ का ध्यान उस समय आता है जब कोई सांसारिक कष्ट हो। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं अवश्य सुनूँगा परन्तु तुम मेरे आदेशों का पालन करो तथा प्रत्येक आत्मनिरीक्षण करे कि वह ख़ुदा तआला के आदेशों का पालन करता है? यदि अल्लाह तआला से शिकायत है तो पहले इस बात का जवाब दे कि कितने हैं जो क़ुरआन-ए-करीम के सात सौ आदेशों का पालन करते हैं। यह तो ख़ुदा तआला का उपकार है कि इसके बावजूद अपने बन्दे पर दया करते हुए उनकी बहुत सारी बातों को अनदेखा करता है। उनकी कुछ दुआओं को सुन भी लेता है। कई लोग हैं जो सम्भवतः नमाज़े विधिवत् भी नहीं पढ़ने वाले परन्तु उनकी कुछ दुआएँ सुनी गईं तो यह अल्लाह का एहसान है बल्कि अल्लाह तआला तो दुआओं के बिना ही अपने दूसरे गुणों के अंतर्गत उनकी आवश्यकताएँ पूरी कर देता है। अतः शिकायत करने का तो कोई औचत्य ही नहीं है। अतः हमें अल्लाह तआला के आदेशानुसार चलने का प्रयास करना चाहिए तथा उसके अनुसार अपनी इबादतों तथा नमाज़ों और अन्य कर्त्तव्यों को अदा करने का प्रयास करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब तक इंसान सम्पूर्ण रूप से एकेश्वर वाद के अुनसार काम नहीं करता, उसमें इस्लाम की मुहब्बत तथा निष्ठा स्थापित नहीं होती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला हमें यह सामर्थ्य प्रदान करे कि हम अपनी नमाज़ों की उस प्रकार रक्षा करने वाले हों कि हमारी आत्मा तथा हमारी भावनाएँ नमाज़ का हक़ अदा करने वाले बन जाएँ।